9

शिक्षक की जवाबदेही से शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता में सुधार

एम. एम. रॉय*

शिक्षक समाज की सर्वाधिक संवेदनशील इकाई है। हमारे देश में शिक्षक का बहुत सम्मान किया जाता है। शिक्षक बच्चों में छुपी हुई प्रतिभा को खोजता है और उनका पोषण भी करता है। यह महसूस किया जा रहा है कि समाज में सामाजिक मूल्यों का लगातार ह्रास हो रहा है। शिक्षक की गुणवत्ता पर भी प्रश्न चिह्न लग रहे हैं। शिक्षकों की जवाबदेही की माँग उठने लगी है। यदि हम शिक्षकों को अपने व्यवसाय के प्रति ज़िम्मेदार और जवाबदेह बनाना चाहते हैं तो शिक्षा व्यवस्था में ऐसा वातावरण बनाना होगा जहाँ वे उत्तरदायित्व स्वयं लेना पसंद करें। लेकिन शिक्षकों की जवाबदेही सुदृढ़ और सुनिश्चित करने से पहले उनके लिए एक वातावरण तैयार किया जाना चाहिए जिसका उल्लेख इस लेख में किया गया है।

भारत सरकार प्रतिवर्ष शिक्षा पर काफ़ी व्यय करती है, काफ़ी नये विद्यालय खुल रहे हैं और विद्यालयों में बच्चों के नामांकन में वृद्धि हो रही है। इसके साथ ही शिक्षक प्रशिक्षण पर भी बल दिया जा रहा है। परंतु फिर भी शिक्षा की गुणवत्ता में कोई खास सुधार नहीं हो रहा है। यह एक विचारणीय प्रश्न है और इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता है। शिक्षा की गुणवत्ता को गंभीरता से लेते हुए यूनेस्को की जी.ई.एम. की रिपोर्ट ने भी वर्ष 2017–18 का शीर्षक शिक्षा में जवाबदेही रखा था। हमारी शिक्षा प्रणाली की यह ज़िम्मेदारी होनी चाहिए कि वह प्रत्येक चरण में शिक्षा प्रणाली से जुड़े लोगों की जवाबदेही सुनिश्चित करे।

शिक्षक समाज की सर्वाधिक संवदेनशील इकाई है और कहा जाता है कि शिक्षण व्यवसाय समाज के सभी व्यवसायों की जननी है। विभिन्न वेतन आयोगों ने प्रत्येक बार शिक्षक के कार्यों के लिए वेतनमान को उन्नत बनाये रखने की सिफ़ारिशें की हैं, ताकि शिक्षक पूर्ण मनोयोग से अपने शिक्षण कार्य को समर्पित हो सकें और अपनी जवाबदेही सुनिश्चित करें। पिछले तीन दशकों में गठित हुई सभी समितियों और आयोगों ने अपना यह सुझाव दिया है कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए यह आवश्यक है कि नियमित रूप से शिक्षक के कार्यों का मूल्यांकन किया जाए और उसकी जवाबदेही सुनिश्चित की जाए।

* *वरिष्ठ प्रवक्ता*, डाइट, घुम्मनहेड़ा, एस.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

एक शिक्षक का कार्य समाज में वर्षों से सम्मानजनक रूप से देखा जाता रहा है। शिक्षकों के लिए ईमानदार, ज्ञानी आदि जैसे विशेषणों का भी प्रयोग किया जाता है। एक शिक्षक का कार्य बहुआयामी है। वह अपने बच्चों में छुपी हुई प्रतिभा को खोजता है और उनका पोषण भी करता है। एक शिक्षक बच्चों के लिए मार्गदर्शक, दार्शनिक और मित्र होने के साथ समाज और राष्ट्र निर्माता भी हैं। हम सभी लोग यह भी महसूस कर रहे हैं कि समाज में से सामाजिक मूल्यों का लगातार ह्रास हो रहा है और क्योंकि शिक्षा सामाजिक प्रणाली का अभिन्न अंग है शिक्षा के स्तर के द्वारा यह भली भाँति जाना जा सकता है कि समाज में जीवन के मूल्यों का क्या स्तर है?

कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा का स्तर एक सूचक के रूप में यह दिखाता है कि समाज में जीवन की गुणवत्ता क्या है? शिक्षक, शिक्षा की एक धुरी है इसीलिए शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता कसौटी पर है तथा शिक्षक-शिक्षकों के योगदान पर भी प्रश्नचिह्न लग रहे हैं। शिक्षक के पास बहुआयामी कार्य होते हैं जिसमें वह बच्चों, विद्यालय, बच्चों के माता-पिता, समाज तथा राष्ट्र की सेवा करते हैं। जब वे कोई ऐसा उत्तरदायित्व सँभालते हैं तो उनकी जवाबदेही तय होनी चाहिए क्योंकि इसमें उनको अपने कार्य के संबंध में दूसरे व्यक्ति के प्रश्नों का जवाब देना बनता है।

यह जवाबदेही नैतिक जवाबदेही बनती है जब आंतरिक इच्छा शक्ति द्वारा व्यक्ति हमेशा कुछ अच्छा करने के लिए अभिप्रेरित रहता है। वहीं दूसरी जवाबदेही में व्यक्ति अपने संस्था के प्रति उत्तरदायी रहता है क्योंकि जो कार्य उस व्यक्ति को दिया जाता है उसको उसे बस पूरा करना होता है। क्या हमें सिर्फ़ कार्य को करना ही है या उस कार्य का प्रदर्शन भी बहुत अच्छा करना है? क्या आपने कभी अनुभव किया है कि जो शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट हैं वे नए-नए उत्तरदायित्व लेना पसंद करते हैं और क्या वे सफलता की भी सीढ़ियाँ चढ़ते है? एक व्यक्ति जब अपने कार्य के प्रति समर्पित रहता है, तो यह समझा जाता है कि वह अपने कार्य से संतुष्ट है। दूसरे शब्दों में कहें तो यदि शिक्षक अपने व्यवसाय में पूरी तरह से समर्पित है तो उसकी जवाबदेही भी सुदृढ़ होगी। यदि हमें शिक्षकों को उनके व्यवसाय के प्रति ज़िम्मेदार और जवाबदेह बनाना है तो शिक्षा व्यवस्था में ऐसे वातावरण बनाना होगा, जहाँ वे उत्तरदायित्व लेना पसंद करें। शिक्षकों की जवाबदेही सुदृढ़ बनाने के लिए निम्निलिखित वातावरण तैयार किया जा सकता है।

शिक्षकों को निर्णय लेने की अनुमति

शिक्षक के पास निर्णय करने की शक्ति होनी चाहिए कि वे क्या पढ़ाएँ और बच्चों के सीखने का मूल्यांकन किस प्रकार करें या बच्चों को कैसे समझें? यह शिक्षक ही होता है जो बच्चों द्वारा महसूस किए जाने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषायी अवरोधों की परेशानियों को सीधे-सीधे महसूस करता है। शिक्षा में गुणवत्ता का लक्ष्य तब तक नहीं प्राप्त किया जा सकता जब तक कि हमारे पास ऐसे शिक्षक न हों जिनकी निष्ठा संदेहों से परे हो जिनमें हम पूरी तरह से विश्वास कर सकें।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से जवाबदेही

विद्यालय में भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि वाले बच्चे पढ़ने आते हैं। विविध पृष्ठभूमि से आए बच्चों का अपना अनुभव होता है और यह बच्चे अपनी गति से सीखते हैं। विविध पृष्ठभूमियों और विभिन्न क्षमताओं वाले बच्चों को पढ़ाना एक चुनौती है। एक अच्छी मूल्यांकन और परीक्षा पद्धति सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकती है। जिसमें बच्चे और शिक्षा तंत्र दोनों को ही विवेचानात्मक और आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि से फ़ायदा हो सकता है। मूल्यांकन ऐसा हो जो यह सुनिश्चित करे कि बच्चे सफलतापूर्वक पढ़ें और बढ़ें तथा अपने पूर्ण रूप में निखरे; विविध क्षेत्रों में उत्कृष्टता को मान्यता मिलनी चाहिए तथा उसका सम्मान होना चाहिए। मूल्यांकन में इस बात पर ज़ोर होना चाहिए कि जो पढ़ाया गया है उसके प्रति बच्चा कितना जवाबदेह रहा है न कि उसके याद करने की क्षमता का। उसकी जवाबदेही में कई बातें शामिल होंगी जैसे कि उसे जो पढ़ाया गया है उसका अपने जीवनानुभव तथा दूसरी तमाम चीज़ों से संबंध जोड़ने की योग्यता, सीखी गयी चीज़ों के बारे में नए और आश्चर्यजनक तरीके से सवाल बनाने की क्षमता आदि। बच्चों के उपलब्धि स्तर के साथ-साथ बच्चे की अभिरुचि, उसके स्वतंत्र रूप से सीखने की क्षमता का मूल्यांकन होना चाहिए। अत: यह समझना ज़रूरी है कि मूल्यांकन की प्रक्रिया को बदलकर बच्चे के सीखने के अनुभवों पर आधारित और गुणवत्ता को आधार बनाकर मूल्यांकन किया जाए। यदि शिक्षक ऐसे मूल्यांकन को सुनिश्चित कर सकें कि विविधता अपने पूर्ण रूप में निखरे और मूल्यांकन में इस बात पर ज़ोर दिया गया कि जो पढ़ाया गया है उसके प्रति बच्चा कितना जवाबदेह रहा है तो अवश्य इसमें शिक्षक की भी जवाबदेही बनती है।

शिक्षण पेशे में हो रहे क्षय का सामना

शिक्षक वह धुरी है जिसके इर्द-गिर्द शिक्षा व्यवस्था घूमती है। वर्तमान संदर्भ में तेज़ी से बढ़ रही स्कूली व्यवस्था और वित्तीय घाटे वाली स्थिति में, समुचित संख्या में शिक्षकों की अनुपलब्धता एक नए तरह के शिक्षकों के आगमन की ओर बढ़ती है। स्कूली शिक्षक की सामाजिक स्थिति में तेज़ी से गिरावट आ रही है तथा शिक्षक को सरकारी स्कूल के तमाम कुप्रशासन और बीमारियों के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जाता है। जबकि इसको पहचाना भी जा रहा है कि शिक्षक का उत्तरदायित्व काफ़ी महत्वपूर्ण है।

अपर्याप्त शिक्षक

बच्चों और शिक्षकों का अनुपात कई क्षेत्रों में अपेक्षित मानक से काफ़ी नीचे है और अधिकांश शहरी क्षेत्रों के स्कूलों में शिक्षकों की बहुलता है। एक शिक्षक वाले 96 प्रतिशत स्कूल ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं। इसका मतलब यह है कि शिक्षकों के पास बच्चों को स्कूलों में रखने और उन्हें सिखाने के लिए जो आवश्यक है उसके लिए न तो समय और न ही ऊर्जा।

गैर-शैक्षिक काम

स्कूली शिक्षकों के पास पढ़ाने के अलावा कई और तरह के काम होते हैं, जैसे—ग्रामीण विकास योजनाओं के लिए आँकड़ों को एकत्र करना, राष्ट्रीय जनगणना, चुनाव के काम और अन्य प्रचार कार्य इनसे वे कक्षा से दूर होते जाते हैं।

शिक्षकों को निर्माण और सृजन की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिले

सरकार और समाज में ऐसी परिस्थितियाँ बननी चाहिए, जिनसे शिक्षकों को निर्माण और सृजन की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिले। शिक्षकों को इस बात की आज़ादी होनी चाहिए कि वे नए प्रयोग कर सकें और संप्रेषण की उपयुक्त विधियाँ और अपने समुदाय की समस्याओं और क्षमताओं के अनुरूप नए उपाय निकाल सकें।

प्रशासनिक व्यवस्था में समानता

शिक्षकों को भर्ती करने की प्रणाली में इस प्रकार परिवर्तन किया जाए कि उनका चयन उनकी योग्यता के आधार पर व्यक्ति निरपेक्ष रूप से और उनके कार्य की अपेक्षाओं के अनुरूप हो। शिक्षकों का वेतन और सेवा की शर्तें उनके सामाजिक और व्यावसायिक दायित्व के अनुरूप हों और ऐसी हों जिनसे प्रतिभाशाली व्यक्ति शिक्षण व्यवसाय की ओर आकृष्ट हों। यह प्रयत्न किया जाए कि पूरे देश में वेतन में, सेवा/शर्तों में और शिकायतें दूर करने की व्यवस्था में समानता का वाँछनीय उद्देश्य प्राप्त किया जा सके। शिक्षकों की तैनाती और तबादले में व्यक्ति-निरपेक्षता लाने के लिए निर्देशक सिद्धांत बनाए जाए। उनके मूल्यांकन की एक पद्धति तय की जाए जो स्पष्ट हो, आँकड़ों एवं तथ्यों पर आधारित हो और जिसमें सबका योगदान हो। जवाबदेही के मानक तय किए जाए। अच्छे कार्य को प्रोत्सहित किया जाए और निष्क्रियता को निरुत्साहित। उच्च ग्रेड में तरक्की के लिए शिक्षकों को उचित अवसर दिए जाए और शिक्षकों की जवाबदेही तय करने के लिए मौजूदा वरिष्ठता आधारित संरचना को प्रदर्शन आधारित संरचना में बदला जाए।

शिक्षकों की जवाबदेही को सुनिश्चित बनाना कोई आसान काम नहीं है, क्योंकि शिक्षकों के प्रदर्शन को मापना कठिन है। उससे प्राप्त होने वाले 'परिणामों' का कोई निर्धारित मानक नहीं है, हालाँकि स्कूलों में पढ़ाई के दौरान किए जाने वाले निरीक्षणों तथा बच्चों के परीक्षा परिणामों आदि से अध्यापन स्तरों के अच्छे या निम्न होने के कुछ संकेत अवश्य मिल सकते हैं।

निष्कर्ष

शिक्षा समाज की प्रगति और बौद्धिक विकास का आवश्यक अंग है। किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था उस देश के राष्ट्रीय हितों और लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक होती है। राष्ट्र और समाज की उन्नति के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उसकी भावी पीढ़ी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके। यदि शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति ज़िम्मेदार और जवाबदेह होता है तो हम अपनी भावी पीढ़ी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दे सकते हैं। लेकिन शिक्षकों की जवाबदेही सुदृढ़ बनाने के लिए एक वातावरण तैयार करना होगा जैसे— शिक्षकों को निर्णय लेने की अनुमति, शिक्षकों को निर्माण और सृजन की ओर बढ़ने की प्रेरणा देना, गैर-शैक्षिक काम नहीं कराना, शिक्षकों की कमी को दूर करना, प्रशासनिक व्यवस्था में समानता लाना, शिक्षण पेशे में हो रहे क्षय को रोकना, तथा बच्चों के सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से शिक्षकों की जवाबदेही पक्का करना आदि।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 1991. *उभरते भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

———. 2002. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

———. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

———. 2007. 'परीक्षा प्रणाली में सुधार', *राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

———. 2007. 'शिक्षा के लक्ष्य एवं पाठ्यचर्या बदलाव के लिए व्यवस्थागत सुधार'. *राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

एन.सी.टी.ई. 2009. *राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या रूपरेखा*. एन.सी.टी.ई., नयी दिल्ली.